डरना मना है

डरावनी कहानियाँ

–: दूसरा 2 दर्जन :–

हेमेन्द्र कुमार राय़

अनुवादक

जयदीप शेखर

PREVIEW

डरावनी कहानियाँ

बँगला भूतिया एवं डरावनी कहानियों का हिन्दी अनुवाद- 2रा दर्जन

लेखक

हेमेन्द्र कुमार राय

अनुवादक

जयदीप शेखर

जगप्रभा

JAGPRABHA.IN

Cover Photo Credit:
Image by kjpargeter on Freepik.

-: eBook :-

DARAWANI KAHANIYAN (Dusra Darjan)
(Horror Stories, 2nd Dozen)
Hindi translation of the 12 Bengali horror stories.
Original author: Hemendra Kumar Roy (1888-1963)
Hindi translation: Jaydeep Das
(Pen Name: Jaydeep Shekhar)
Copyright: © 2023: Translator
Published by:
JagPrabha
Barharwa (SBG), JH- 816101
jagprabha.in | jagprabha.bhw@gmail.com
Price: ₹ 125.00

हेमेन्द्र कुमार राय

(1888 - 1963)

बँगला में किशोर-साहित्य के एक लोकप्रिय कथाकार। बाल-किशोरों के लिए सैकड़ों कहानियों एवं लघु उपन्यासों की रचना की- बड़ों के लिए भी बहुत कुछ लिखा। 1930 से 1960 के दशकों में उनकी कहानियों के बिना बाल-किशोर पत्रिकाएं अधूरी-सी लगती थीं। मुख्यरूप से उन्होंने दुस्साहसिक (Adventure), जासूसी (Detective) और परालौकिक (Supernatural), कहानियाँ लिखी हैं। कहानियों में रहस्य (Mystery), रोमांच (Thrill) और भय (Horror) का ऐसा पुट होता है कि दम साधकर कहानियों को पढ़ना पड़ता है। कुछ कहानियाँ खजाने की खोज (Treasure hunt) और वैज्ञानिक कपोल-कल्पना (Science-fiction) पर भी आधारित हैं। उनकी रची 'कुमार-बिमल' और 'जयन्त-माणिक' श्रृंखलाएं अपने समय में बहुत लोकप्रिय हुई थीं- पहली दुस्साहसिक कहानियों की तथा दूसरी जासूसी कहानियों की श्रृंखला है। उनकी रची परालौकिक कहानियों को पढ़ने का अलग ही रोमांच है।

***

कहानियाँ

अटारी रहस्य 6

खामेन की ममी 13

सिरकटी लाश 27

विजया का प्रणाम 36

दर्पण का इतिहास 42

दहकती निगाहें 48

भूतिया बस 55

कौन थी वह? 63

तीन नम्बर कमरा 68

बड़े मैदान का बँगला 74

बगीचे का पिशाच 85

भीमा डकैत का बरगद 93

अटारी रहस्य

(चिले-छातेर घॅर)

–1–

मेरे बचपन का दोस्त माणिक। जबकि घटना है, तब वह सपरिवार पश्चिम के एक शहर में घूमने गया हुआ था; उस शहर का नाम नहीं ही लेता हूँ।

कुछ दिनों के बाद माणिक से यह चिट्ठी मिली–

'भाई अमल,

'तुम्हारी बड़ी याद आ रही है; कारण यह है कि यह जगह इतनी सुन्दर है कि तुम्हें दिखाये बिना मुझे संतुष्टी नहीं मिलने जा रही।

'जिस मकान में ठहरा हूँ, वह भी लाजवाब है। एक तरफ खुला मैदान, दो तरफ घने वनों की कतार, एक तरफ पर्वत-शृंखला और इन सबके बीच से बह रही है एक बल खाती नदी।

'तुम आज ही बोरिया-बिस्तर बाँधकर रवाना हो जाओ। हमारे अटारी वाले कमरे से चारों तरफ के दृश्य स्पष्ट दिखायी पड़ते हैं। तुम ठहरे कवि, इसलिए माँ ने तुम्हारे लिए वह कमरा 'रिजर्व' कर रखा है।

'आने में देर किये, तो जुर्माना भरना होगा। यहाँ का सब समाचार बढ़िया है। इति–

तुम्हारा माणिक'

माणिक की माँ ने बढ़िया 'कॉम्प्लीमेण्ट' दिया मुझे– तो मैं कवि हूँ! बँगाल में कविता-जैसी पंक्तियाँ लिखकर कोई भी कवि बन सकता है न! इतनी बड़ी एक उपाधि पाकर भी अगर माणिक के आमंत्रण की रक्षा न करूँ, तो यह कृतघ्नता होगी! अतएव बोरिया-बिस्तर बाँधना शुरू कर दिया।

–2–

माणिक लोगों के पास आ पहुँचा हूँ।

मकान पुराना होने पर भी महल-जैसा विशाल और देखने में बहुत ही खूबसूरत था। चारों तरफ ऊँची चहारदीवारी से घिरे एक विशाल बागान के बीच में खड़ा यह ऊँचा मकान प्रत्येक राहगीर का ध्यान अपनी ओर खींचता था।

इधर-उधर उत्सुक निगाहें डालते हुए माणिक के साथ जब बागान के बीच बने रास्ते से मकान की ओर बढ़ रहा था, तब अचानक मुझे एक तरफ कुछ दिखायी पड़ा। विलायती 'पाम' पेड़ों से घिरे जमीन के एक टुकड़े पर स्मृतिस्तम्भ-जैसा कुछ खड़ा था।

पूछा, "वह क्या है माणिक?"

माणिक बोला, "कब्र।"

"कब्र!"

"हाँ। यह मकान पहले एक गोरे साहब का था। उनकी मेम की मौत के बाद उन्हें यहीं दफना दिया गया था।"

इसी समय माणिक का कुत्ता 'जिमी' मालिक की आहट पाकर वहाँ आ पहुँचा। आते ही वह गुस्से से गुर्राने लगा! देखा, वह कब्र की ओर देखते हुए गुर्रा रहा था, लेकिन उस तरफ तो मुझे कुछ दिखायी नहीं पड़ा!

कहा, "माणिक, तुम्हारा कुत्ता क्या देखकर गुस्सा हो रहा है?"

माणिक बोला, "पता नहीं। जिमी उस कब्र को देखते ही गुस्सा हो जाता है। मानो, वह हवा के साथ लड़ना चाहता है।"

मैंने कहा, "नहीं माणिक, वह किसी से लड़ना चाहता है– ऐसा नहीं लग रहा; देखकर लग रहा है कि वह बुरी तरह डर रहा है।"

माणिक हँसकर बोला, "नस्ल और नाम से विलायती होने पर भी जिमी ने हमारे यहाँ आकर हिन्दू धर्म अपना लिया है। हिन्दू के घर में ईसाई का कब्र वह शायद पसन्द नहीं करता। ...खैर, छोड़ो इन बातों को। चलो, पहले अन्दर चलते हैं।"

घर के अन्दर गया। जैसा विशाल भवन, वैसे ही बड़े-बड़े कमरे। इन कमरों की हालत अभी अच्छी नहीं थी– कहीं चूना-बालू झड़ रहे थे, कहीं फर्श में चूहों ने बिल खोद रखे थे, कहीं छत के शहतीरों से चमगादड़ लटक रहे थे।

माणिक ने बताया, “यह मकान बहुत दिनों से खाली पड़ा था। मारवाड़ के इस इलाके में कुसंस्कार कुछ ज्यादा ही है; शायद उस कब्र के चलते ही इस मकान को किसी ने अब तक किराये पर नहीं लिया।”

मैंने कहा, “घर में कब्र-टब्र होना मुझे भी नहीं जँच रहा। जीवन व मृत्यु के चिह्न एक साथ सामने रहने पर सुख से नहीं रहा जा सकता।”

माणिक बोला, “हम लोग लेकिन बीते तीन हफ्तों से यहाँ बड़े सुख से रह रहे हैं। उस कब्र को फाड़कर कभी कोई मेम साहब हमारे साथ गपशप करने नहीं आयीं। ...चलो, अब ऊपर चलकर तुम्हारा कमरा देखते हैं।”

लकड़ी की चौड़ी सीढ़ियाँ हम चढ़ने लगे। किसी समय ये सीढ़ियाँ शानदार रही होंगी– अभी भी यह समझा जा सकता था; लेकिन फिलहाल ये इतनी जीर्ण-शीर्ण हो रही थीं कि हमारे पैरों के भार से ये मानों दर्द से कराहने लगी हों!

–3–

अटारी कहने से हम जो समझते हैं, यह वैसा नहीं था– यह कमरा नये ढंग का था। आम तौर पर ऐसे कमरे बहुत छोटे होते हैं, लेकिन यह लम्बा-चौड़ा कमरा था। छत पर जहाँ लकड़ी की सीढ़ियाँ समाप्त हो रही थीं, वहीं से यह कमरा शुरू हो रहा था। तीनों तरफ कुल बारह बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ एक कतार में थीं। कालीन बिछे फर्श पर कुछ पुराने सोफे, काउच, चेयर, ड्रेसिंग टेबल, वाशिंग स्टैण्ड और लोहे का एक विशाल पलंग पड़ा हुआ था। सीढ़ियों को छोड़ जैसे ही इस कमरे में कदम रखा– पता नहीं क्यों– मुझे ऐसा महसूस हुआ कि यह जगह खाली नहीं है; यहाँ कोई अदृश्य एवं वीभत्स रहस्य लम्बे समय से गुपचुप वास कर रहा है! साथ-ही-साथ मेरा मन-मस्तिष्क एक अनजानी विभीषिका से त्रस्त हो उठा। ऐसा लगने लगा कि यहाँ जरा भी हवा नहीं है और मेरा दम घुट रहा है!

जल्दी से बोला, “माणिक, कमरे की खिड़कियों को बन्द क्यों कर रखा है? खोल दो, खोल दो।”

माणिक ने ऐसा ही किया। बाहर की खुली रोशनी और हवा चंचल बच्चों के समान झट-से अन्दर आ गयीं। इसी के साथ मेरे मन की बेचैनी दूर हो गयी।

एक खिड़की के सामने खड़े होते ही बहुत ही सुन्दर दृश्य उभर आया।

पहले नजर आयीं पर्वतश्रृंखला की चोटियाँ, जो ऊपर उठते हुए नीले आकाश को छू रही थीं– जैसे, पूजा की थाली में नैवैद्य सजे हों! उसके सामने बह रही थी नागिन-सी बल खाती एक नदी! काली पर्वतश्रृंखला के नीचे धूप में चमकती नदी को देख ऐसा लग रहा था, जैसे काले बादलों के नीचे विद्युत की एक चंचल रेखा हो!

इसके बाद ही मैंने पाया कि मेरे लिए आरक्षित इस कमरे के नीचे ही वह कब्र है! मेरे मन में खटका-सा लगा।

मुड़कर बोला, "देखो माणिक, इतनी खूबसूरत जगह में जिस गोरे साहब ने यह भवन बनवाया, वे निश्चित रूप से कवि रहे होंगे; लेकिन कवि की दृष्टि रखने पर भी इस मनोरम स्थान में उन्होंने अपनी पत्नी को क्यों दफनाया– यह मेरी समझ में नहीं आ रहा है!"

माणिक बोला, "यहाँ के लोगों के मुँह से एक गप्प सुनी है। मृत्यु के बाद मेम साहब के शव को कब्रिस्तान ही ले जाकर दफनाया गया था, लेकिन अगले दिन नजर आया कि मुर्दे सहित ताबूत कब्र के बगल में जमीन पर पड़ा हुआ था! ताबूत को फिर से कब्र के गड्ढे में डालकर मिट्टी से दबा दिया गया, लेकिन उसके अगले दिन फिर वही दृश्य! लगातार तीन दिनों तक इस दृश्य के दुहराये जाने के बाद पादरी ने कहा– 'इस पापी की देह को यह कब्रिस्तान अपनाना नहीं चाहता। इसे कहीं और ले जाया जाय।' फिर सबने मजबूरी में उस शव को इस घर में लाकर दफनाया। तब से 'पापी' ने कब्र से निकलकर भागने की कोशिश नहीं की है।"

मैंने पूछा, "पादरी ने साहब की मेम की देह को पापी की देह क्यों कहा?"

माणिक बोला, "मेम ने शायद आत्महत्या की थी! ...लेकिन मैं ऐसी गप्पों पर विश्वास नहीं करता। ये सब बनी-बनायी कहानियाँ हैं!"

–4–

कमरे के चारों तरफ निगाहें दौड़ाकर मैंने पूछा, "इस कमरे में ये पुराने असबाब कहाँ से आये?"

माणिक बोला, "सारे सामान उसी साहब के हैं। उनकी मेम इसी कमरे में रहती थीं। पत्नी की मृत्यु के बाद उन्होंने सारे सामान को ज्यों-के-त्यों रहने दिया। हमें भी मना कर दिया गया है कि हम इस कमरे की किसी चीज को न हटायें।"

अचानक दीवार पर टँगी एक बड़ी-सी ऑयल पेण्टिंग ने मेरा ध्यान खींचा। महिला की तस्वीर थी। वास्तव में, यह एक आदमकद तस्वीर थी।

पूछा, "यह किसकी तस्वीर है मणिक?"

माणिक बोला, "उसी मेम की। पास जाकर देखो न– मेम देखने में बिना डैनों वाली परी-जैसी थी न!"

कुछ कदम चलकर तस्वीर के नजदीक गया। एक उम्रदराज महिला की तस्वीर उकेरी गयी थी। महिला की उम्र पैंसठ से कम नहीं होगी। छरहरा शरीर, पतली बाँहें, सन-जैसे सफेद बाल कन्धे पर गिरे हुए थे। होंठों के कोनों पर अत्यन्त कुटिल मुस्कान खेल रही थी। नाक तोते की चोंच-जैसी मुड़ी हुई, आँखें गड्ढों में धँसी हुईं। उफ्फ! उन आँखों से जो क्रूर दृष्टि झाँक रही थी, उसका मैं वर्णन नहीं कर सकता! मुझे महसूस हुआ– नाग की आँखों से भी भयानक वे आँखें अभी भी जीवन्त थीं! कैनवस पर उकेरी गयी कोई तस्वीर और उसकी आँखें इतनी स्वाभाविक एवं जीवन्त भी हो सकती हैं– यह मेरी कल्पना के बाहर की बात थी! किसी अँग्रेजी किताब में छपी डायन की तस्वीर मानो रक्त-मांस का देह धारण कर मेरे सामने आ खड़ी हुई हो!

माणिक बोला, "क्यों भाई अमल, मेम साहब पसन्द आयी तुम्हें?"

घृणा से मुँह फेरते हुए मैंने कहा, "पसन्द? जिसे देखकर यह तस्वीर बनायी गयी है, वह जरूर जघन्य प्रवृत्ति की होगी। तुम्हारी इस मेम की तस्वीर को अगर कमरे से बाहर निकालकर न रखो, तो रात में मुझे बुरे सपने आयेंगे।"

माणिक बोला, "लेकिन कमरे से कुछ भी हटाने से मना किया गया है।"

मैंने कहा, "फिर मुझे कोई और कमरा दो!"

माणिक ने थोड़ी देर सोचकर कहा, "अच्छा, चलो हम दोनों मिलकर तस्वीर को कमरे से बाहर रख देते हैं। बाद में मकान छोड़ते समय फिर तस्वीर को दीवार पर टाँग दिया जायेगा।"

पलँग पर खड़े होकर हम दोनों ने उस विशाल तस्वीर को उतारने की कोशिश की, लेकिन उफ्फ! तस्वीर कुछ ज्यादा ही भारी थी– मनुष्य के शरीर के वजन-जितनी भारी!

माणिक ने आश्चर्य से कहा, "तस्वीर कभी इतनी भारी होती है!"